International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 7 Issue 1, January-February, 2019, Impact Factor: 3.275

प्रेमचंद के किसान एवं पिछड़ी जातियाँ

अनीता कुमारी

विषय-हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय कॉलेज भिवानी

भारत एक कृषि-प्रधान देश है। प्रेमचंद ने इस कृषि-व्यवस्था के कर्ता-धर्ता किसान को अपने उपन्यासों और कहानियों का मुख्य विषय बनाया। उनके पहले तथा उनके बाद किसी भी रचनाकार ने इतने विस्तार से किसान को आधार बनाकर हिंदी में साहित्य-सृजन नहीं किया। प्रेमचंद के किसान पिछड़ी जातियों से हैं। इन्हीं किसानों से भारत की कृषि-संस्कृति का निर्माण हुआ है। भारतीय संस्कृति के निर्माण में पिछड़ी जातियों की भूमिका को प्रेमचंद के किसान-कथा-साहित्य के माध्यम से समझने का प्रयास किया जा सकता है प्रेमचंद ने किसान को साहित्य का विषय बनाया। उनके कथा-साहित्य में किसान-जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण हुआ है।

भारत का सबसे बड़ा वर्ग किसान रहा है। किसान भारत की कृषि-संस्कृति का मूलाधार है। किसान के बिना भारतीय संस्कृति का कोई भी विश्लेषण अधूरा होगा। यह बात बार-बार दुहराई गई है "हिंदी में किसानों की समस्याओं पर ज़्यादा उपन्यास लिखे ही नहीं गए, जो लिखे भी गये हैं, उनमें प्रेमचंद की सूझबूझ का अभाव है।"[1] किसान-जीवन के साथ तालमेल बनाते हुए प्रेमचंद ने जो रचा वह हिंदी के लिए एकदम नया था, "उन्होंने उस धड़कन को सुना जो करोड़ों किसानों के दिल में हो रही थी। उन्होंने उस अछूते यथार्थ को अपना कथा-विषय बनाया,"[2] किसान के जीवन को 'भरपूर निगाह' से देखने तथा लिखने के कारण ही, " 'प्रेमाश्रम' किसान-जीवन का महाकाव्य है। उसमें उस जीवन का एक पहलू नहीं दिखाया गया, वह एक विशाल नदी की तरह है जिसमें मूल धारा के साथ आसपास के नालों का पानी, जड़ से उखड़े हुए पुराने खोखले पेड़ और खेतों का घासपात भी बहता हुआ दिखाई देता है।"[3]

प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों के बारे में यह बात सर्वमान्य है कि उनमें सर्वाधिक प्रमुखता से किसान-जीवन को ही विषय बनाया गया है। हिंदी आलोचना में यह बात अच्छी तरह पहचानी गयी है कि प्रेमचंद ने किसानों के शोषण-उत्पीड़न को न केवल चित्रित किया है, बल्कि इनके विरोध की चेतना को भी पकड़ा है। किसानों के शोषकों की पहचान सामंतों, पुरोहितों एवं महाजनों के रूप में की गयी है। प्रेमचंद किसान की समस्या के व्यवस्थागत कारणों की तलाश करते हैं। ऐसा किसान जिसके पास कम ज़मीन है। वह परिवार की मदद से खेती करता है। पाँच बीघे के आसपास की खेती का वह मालिक भी

होता है और श्रम करने वाला किसान भी। उसकी हैसियत इतनी नहीं होती कि अपनी खेती के लिए मजदूर रख सके। जीवन की कठिन परिस्थितियों में प्रायः उसे कर्ज़ लेना पड़ता है। गाँव की महाजनी पद्धति से उसे कर्ज़ मिलता है, जिसके सूद की दर जानलेवा होती है। 'सवा सेर गेहूँ' में प्रेमचंद ने कर्ज़ की इस पद्धति के भयानक रूप को कहानी में ढाला है।

प्रेमचंद का यही किसान भारत को कृषि प्रधान देश बनाता है। आज़ादी के पहले भारत की अर्थव्यवस्था, समाजव्यवस्था और धर्मव्यवस्था को बनाने में गाँवों की भूमिका आज की अपेक्षा ज़्यादा बड़ी थी। इन गाँवों में रहनेवाली शत प्रतिशत आबादी कृषि-व्यवस्था पर आश्रित थी। खेतिहर मजदूर की स्थिति थी कि वे प्रायः भूमिहीन थे या उनके पास नाम मात्र की ज़मीन थी। उनके मकान भी अक्सर ऐसी जमीन पर बने होते थे, जिनके स्वामित्व की स्थिति इन मजदूरों के पक्ष में नहीं होती थी। इस तरह कृषि-कार्य के प्रति जमींदार तथा मजदूर वर्ग की स्थिति विडंबनात्मक थी। जमींदार वर्ग के पास ज़मीन थी, परंतु वह खेती का काम स्वयं नहीं करता था। मजदूर वर्ग खेती के तमाम काम करता था, परंतु वह जमीन का मालिक नहीं होता था। इन दोनों वर्गों को किसान नहीं कहा जा सकता है। कृषि-व्यवस्था का अंग होने के बावजूद ये दोनों वर्ग किसान नहीं थे। प्रेमचंद का ध्यान किसानों पर था। वे न तो जमीदारों को किसान मानते थे और न ही मजदूरों को। किसान-समस्या पर लिखी गई उनकी कहानियों और उपन्यासों के किसान स्वयं खेती करते हैं

प्रेमचंद ने जिस किसान को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है, उसे ही हमने असली किसान माना है। मतलब यह कि यदि पूछा जाए कि किसान कौन है, तो हम कहेंगे कि किसान होरी है, हल्कू है, शंकर है आदि-आदि। फिर पूछा जाए कि इस किसान की असली समस्या क्या है? प्रेमचंद के अनुसार ही बताइए कि उसकी असली समस्या क्या है? तब हमारा ध्यान जाता है आलोचकों की तरफ, और उनमें भी सबसे पहले रामविलासजी की तरफ, उनकी पुस्तक 'प्रेमचंद और उनका युग' की तरफ। इस पुस्तक से मालूम होता है कि किसान की असली समस्या ऋण की समस्या है। प्रेमचंद ने अपने किसान की जो पहचान बताई उसे हिन्दी आलोचकों ने अपने-अपने तरीके से समझा। प्रेमचंद के किसान को कभी ऋण से दबा हुआ बताया गया, तो कभी व्यवस्था के दमन-चक्र में पिसता हुआ दिखाया गया।कभी उसे विद्रोही तेवर के साथ दिखाया गया तो कभी धर्मभीरू के रूप में दिखाया गया।

प्रेमचंद के किसान को प्रायः आर्थिक प्रश्न से जुड़ी समस्याओं के इर्द-गिर्द परेशान हाल में दिखाया गया। उसकी प्रत्येक समस्या के पीछे या प्रत्येक समस्या के बाद आर्थिक प्रश्न को जरूर उठाया गया। यदि वह परेशान है तो इसलिए क्योंकि वह कर्ज़ से दबा है। यदि वह धर्म से डरता है तो परिणामस्वरूप अनावश्यक खर्च करके आर्थिक दबाव झेलता है। कुल मिलकार, उसकी असली समस्या आर्थिक बताई गई। समझ में यह बात आई कि यदि उसकी आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जाए तो उसकी समस्याएँ सुलझ जाएँगी। क्या यह निष्कर्ष पूरी तरह से ठीक है? किसान की सभी समस्याओं

की जड़ में क्या आर्थिक पक्ष ही है? प्रेमचंद का कथा-साहित्य केवल यही बताता है कि किसान को आर्थिक रूप से शोषित करने वाले कौन-कौन से घटक हैं? उनके कथा-साहित्य में किसान के सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्ष की पड़ताल करने की जरूरत है। यह इसलिए ज़रूरी है क्योंकि भारतीय संस्कृति का असली निर्माता यही किसान-समाज है।

प्रेमचंद जिस किसान की पहचान लेकर आए थे, वे मेहनतकश खेतिहर सहृदय किसान थे। 'गोदान' तथा अन्य रचनाओं में प्रेमचंद यही दिखाते हैं कि किसान अपने सम्मान के लिए चिंतित है। वह गाय पालना चाहता है तो सम्मान के लिए, वह कर्ज़ लेता है, तो अपने सम्मान की रक्षा के लिए। वह अपने जीवन में जो भी जोखिम उठाता है, उन सबका मकसद यही है कि 'मरज़ाद' बनी रहे। ध्यान दिया जाना चाहिए कि दातादीन सिलिया का सम्मान नहीं करता। सिलिया उसके पुत्र मातादीन के साथ प्रेम-संबंध रखती है, मगर दातादीन का व्यवहार मौकापरस्त और घृणास्पद है। वह अपने पुत्र के नाजायज संबंध का कभी विरोध नहीं करता और सिलिया के प्रति न्यायोचित व्यवहार भी नहीं रखता। दातादीन का व्यवहार 'आनर किलिंग' की पूर्व परंपरा है और होरी का व्यवहार भारतीय संस्कृति की मानवीय कसौटी। भारतीय संस्कृति को बनाने में होरी की मनुष्यता और साहस का योगदान है, जबकि दातादीन की धूर्तता भारतीय समाज का कलुषित पक्ष है।

होरी का हर कदम अपनी मरजाद की चिंता से युक्त है तथा यह चिंता मनुष्यता के पक्ष में है। वह भले कर्जदार है, वह भले ही बेटी की शादी में समझौता करता है; परंतु ध्यान दीजिए कि ईमानदारी और शराफत की उसकी चेतना कभी मरने नहीं पाती। वह हमेशा चाहता है कि परिश्रम करके कर्जमुक्त हो जाए तथा शांतिपूर्वक जीवन जिए। वह कभी नहीं चाहता कि किसी दूसरे का हक मार ले।

प्रेमचंद ने बार-बार प्रस्तुत किया है।गोदान' ही नहीं प्रेमचंद के पूरे कथा-साहित्य में किसान की मूल समस्या मरजाद को बचाए रखने की समस्या है। यदि वह मरजाद की चिंता नहीं करता तो ऋण की समस्या उसके सामने नहीं आती। वह ऋण लेता है अपनी मरजाद बचाने के लिए और ऋण को चुकाने के प्रति भी वह प्रतिबद्ध है ताकि मरजाद बची रहे। प्रेमचंद के किसान-पात्र ऋण-ग्रस्त ज़रूर हैं लेकिन ऋण लेकर बेशर्म बन जाने की प्रवृत्ति उनमें नहीं है। वे ऐसा नहीं सोचते कि ऋण चुकाए बिना जिंदगी जीने की कोई राह चुन ली जाए। यद्यपि वे स्वयं कहीं से दोषी नहीं हैं। ऋण की तत्कालीन महाजनी पद्धति ने उन्हें परेशानी में डाल रखा था। 'सवा सेर गेहूँ' में इसकी नंगी सच्चाई देखी जा सकती है। यह किसान जितना श्रम करता है, उससे तो उसे समृद्ध होना चाहिए था, पर व्यवस्थागत दोषों के कारण वह ऋणग्रस्त हो जाता है।

प्रेमचंद ने किसान परिवार की टूटन को जिस तरह चित्रित किया है, उससे ज़्यादा बारीकी से परिवार को एक बनाए रखने के प्रयासों को पहचाना है। रही बात परिवार के टूटने की, तो यह स्थिति 'बड़े घर

की बेटी' में भी उत्पन्न होती है और वहाँ भी कोई आर्थिक कठिनाई वजह नहीं है। प्रेमचंद किसान की जिजिविषा को जिस तरह चित्रित करते हैं, उस पर बार-बार ध्यान चला जाता है। रग्घू सौतली माँ से प्रताड़ित होने के बावजूद पिता की मृत्यु के बाद पूरी गृहस्थी को सँभालता है। पन्ना के बच्चों को अपने बच्चों की तरह पालता है। पन्ना एक बार कहती भी है रग्धू केवल बड़ा भाई नहीं, बल्कि बाप है। परिवार के सदस्यों के प्रति करुणा, जिम्मेदारी और अपनापन के भाव को प्रेमचंद ने इस कहानी में रखा है। परिवार के लिए त्याग करना और निरंतर मरजाद की चिंता करना किसान की प्रवृत्ति दिखाई गयी है। रग्घू व्यक्तिगत सुख-सुविधा की परवाह किए बगैर परिवार के लिए परिश्रम करता है ताकि उसके स्वर्गीय पिता की मर्यादा बची रहे। केदार मुलिया से विवाह करके सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है

संदर्भ

[1] प्रेमचंद और उनका युग, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1993, पृ. 44
[2] वही, पृ. 45
[3] वही, पृ. 45